तमसो मा ज्योतिर्गमय

# शिरडी साईं ग्लोबल फाउंडेशन


**साईं करुणा धाम, नोएडा**

ई–4, सैक्टर–61, नोएडा, उत्तर प्रदेश, भारत, फोन: 0120-2587768, 2586166

ई–मेल: saikarunadham@gmail.com, वेबसाईट: www.saikarunadham.org


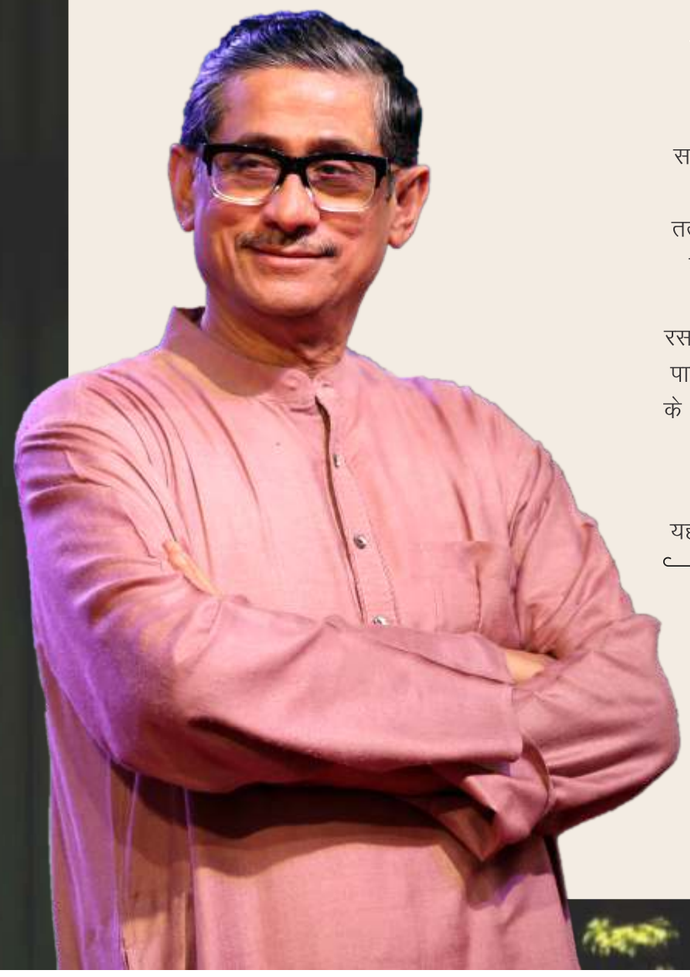

## श्रीगुरूओं की परंपरा

मूल रूप से ओड़िया भाषा में रचित 'श्रीगुरू भागवत' के षष्ठ खण्ड की हिन्दी में रचित 'श्रीगुरूओं की परंपरा' नामक इस पुस्तक में भारतीय ऋषि–चिंतन, ऋषि–प्रज्ञा, सद्गुरूओं के नाम एवं कर्म, गायत्री–मंत्र, हिंदु–धर्म की तीन प्रथाएँ, महावाक्य, तत् एवं त्वम् विचार, पुराण तथा इतिहास, देवधारा एवं महर्षिधारा, ऋषि–संप्रदाय एवं गोत्र का प्रचलन, यज्ञ के दिव्य रसायन, महाचैतन्य, महाकाल एवं महाविश्व, पारिवारिक धर्म और श्रीगुरू भागवत–पठन के बहुमुखी लाभ आदि महत्वपूर्ण विषयों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के लिए यह पुस्तक निस्संदेह लाभप्रद सिद्ध होगी।

# साईं प्रभा

स्थापना दिवस स्मारिका-2022

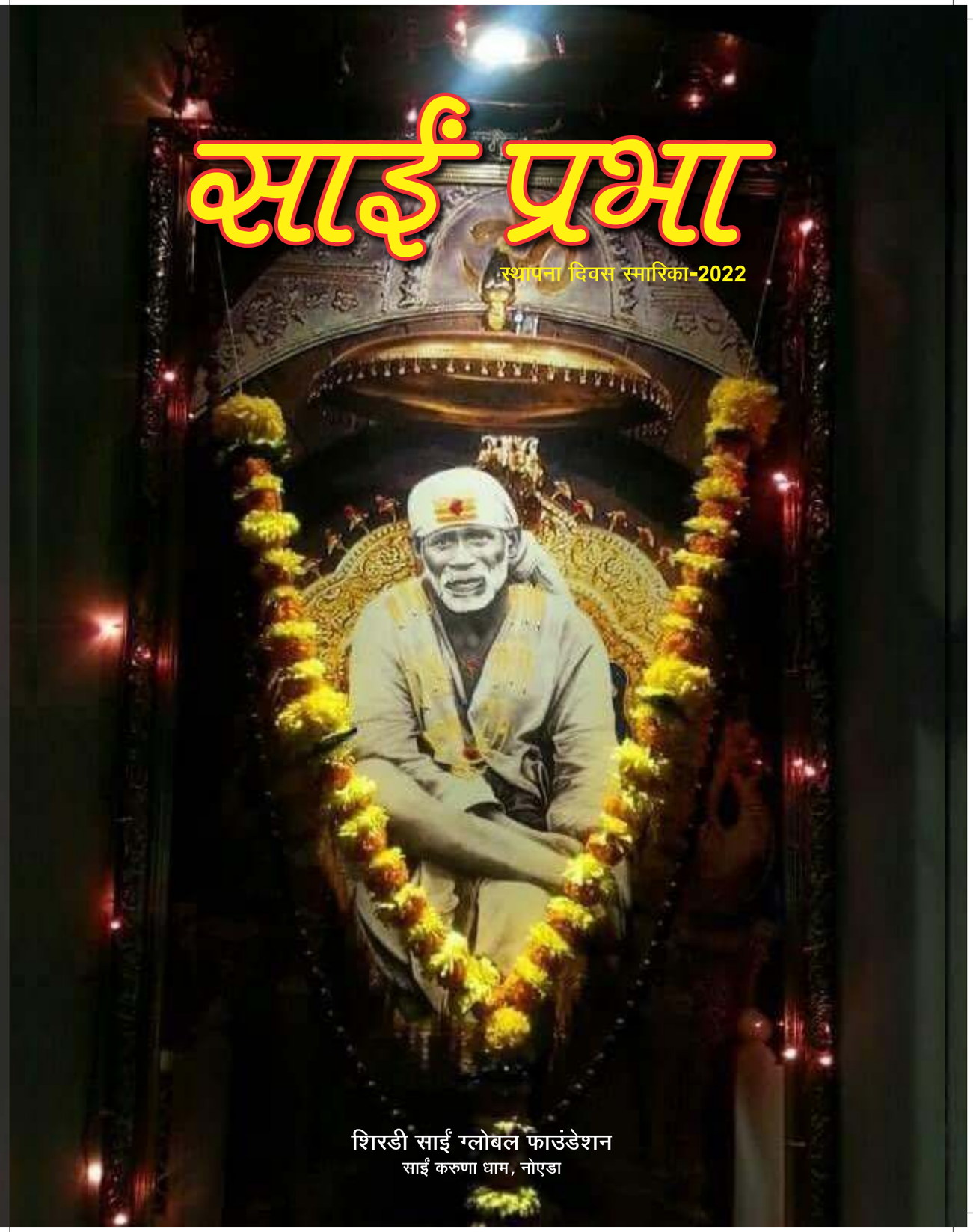

**शिरडी साईं ग्लोबल फाउंडेशन**

साईं करुणा धाम, नोएडा

ज्ञान एवं भक्ति के दिव्य स्रोत एवं महान संत श्री गुरूदेव का स्मरण तथा श्रीहरि को प्रणाम करके (मैं प्रस्तुत ग्रंथ की रचना कर रहा हूँ)।

एक दिन (मेरे हृदय में) गुरूतत्व के विषय में लिखने की भावना उत्पन्न हुई (और फिर मैंने) भाव–सिक्त होकर गुरू भागवत का सप्तम खण्ड लिखना आरंभ किया।

(यह ग्रंथ) केवल भागवत नहीं हैं, अपितु यह भागवत सत्य है। जिस प्रकार जल के बिना खेती नहीं होती, उसी प्रकार भाव के बिना भक्ति नहीं होती।

जब तक भावलोक में प्रवेश नहीं होता, तब तक हृदय में भक्ति का स्फुरण नहीं होता। (जब मेरे हृदय में) भक्ति का स्फुरण हुआ, तब मैंने गुरू भागवत की रचना की।

जो मृत नहीं होता वह अमृत (कहलाता) है। इसीलिए भक्ति–रूपी अमृत शाश्वत है। चूँकि ईश्वर अनंत है, इसीलिए भक्तितत्व भी अनंत है।

भक्ति केवल लोगों द्वारा पूजन, आरती, अर्चना, भजन, योग, ध्यान, जप (आदि) नहीं है। ये सब तो भक्ति के केवल उपाय हैं।

मनुष्य की बुद्धि अत्यंत सीमित है किंतु भक्ति बुद्धि एवं ज्ञान के परे है। (भक्ति की) परिभाषा द्वारा उसके अर्थ को समझा नहीं जा सकता। (जब ईश्वर या गुरू) अनुभव प्रदान करते हैं, तभी उसका अर्थ समझ में आता है।

सीमित नर का (उत्कट) प्रेम–भाव जब असीमित के प्रति होगा, तो उससे हृदय में स्पंदन जागृत होता है। उसी को भक्ति कहते हैं।

(जैसे–जैसे) मनुष्य भक्ति–स्थिति में उत्तरित होता जाता है (अर्थात जैसे–जैसे उसकी भक्ति बढ़ती है), वह भाव–प्रवण होता जाता है। फिर भाव से उसका भावोत्तरण होने लगता है और क्रमशः मनुष्य ऊर्ध्वगति प्राप्त करने लगता है।

(तब नदी के) किनारों को लाँघने वाली बाढ़ की भाँति हृदय से भाव झरने लगते हैं। जब (मनुष्य के हृदय में भक्ति के ये उत्कट) भाव प्रवाहित होने लगते हैं, तब (उसकी) जीव प्रकृति मर जाती है (अर्थात वह दिव्य भाव धारण करने लगता है)।

# श्रीगुरु भागवत

**English**

**Hindi**

**Odia**

**Bengali**

**Gujrati** **Marathi** **Bhojpuri** **CD in Punjabi**

## Music CDs in Hindi

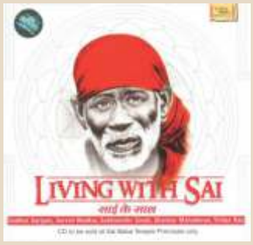

## Music CDs in Regional Languages

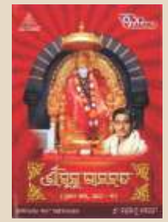

Music CDs and Books available at:
**Sai Karuna Dham,** E-4, Sector- 61, Noida- 201301
Mr. R. K. Sharma, Mobile: 09871407666
E-mail: saikarunadham@gmail.com